RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष- 13वां अंक 51 जुलाई – सितम्बर 2019 संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

स्वभाव गजेन्द्र जैन, उदयपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

इन चित्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश छिपा है।

देखिये और समझिये..

आध्यात्मिक, तात्विक,
धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ
स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन,
जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग शास्त्री, जबलपुर

डिजाइन/ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर, श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
श्री निमित्त शाह, कनाडा

1	सूची	1
2	संपादकीय	2–3
3	इतिहास की दृष्टि में–दिल्ली कुतुबमीनार.....	4
4	सराक जाति और जैन धर्म	5–6
5	क्षमा में भी वीरता	6
6	मन करता है ...	7
7	ऐसा भी वात्सल्य / सच्ची बात	8
8	अंतिम सत्य / चैतन्य बाल भास्कर	9
9	हमारे जैन महापुरुष – साहू टोडरजी	10
10	मोबाईल गेम के टास्क.....	11–12
11	पबजी हारने पर लगा झटका	13
12	ऐतिहासिक वीर नारियाँ –मल्लिका, अंबिका	14
13	यात्रा वृतांत – दक्षिण भारत का जैनत्व	15–16
14	बाल शिविर की झलकियाँ	17–18
15	अब नहीं देखूँगा	19–20
16	अद्भुत धर्म अनुराग	21–22
17	प्रेरक प्रसंग	23
18	अनर्थदण्ड	24–25
19	शराबी और मिथ्यात्वी	25
20	समाचार – बाल संस्कार शिविर...	26–28
21	अब पारले जी बिस्किट में	29
22	चाऊमिन खाने से	29
23	राजकुमार सम्प्रति	30
24	डिस्पोजल की चाय.....	31
25	कविता – वात्सल्य पर्व	32
26	जन्मदिवस	

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क -500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

संपादकीय

प्राचीन मान्यतायें और उनके छिपे अर्थ

हमारे समाज में कई मान्यतायें प्रचलित हैं। इन मान्यताओं में कुछ हिन्दू शास्त्रों में लिखीं हैं और कुछ हमारे पूर्वज अपनी अगली पीढ़ी को सुनाते रहे हैं। इन सभी मान्यताओं को धार्मिकता के साथ जोड़ दिया जाता है और समाज बिना समझे धर्म का आदेश मानकर इन मान्यताओं के अनुसार करता रहता हैं और कुछ समझदार कहे जाने वाले लोग इन मान्यताओं को अंधविश्वास या पुरानी सोच कहकर मजाक उड़ाते हैं। लेकिन वास्तव में हमें इन मान्यताओं के प्रचलन के पीछे सोच को जानना जरूरी है। यदि गहराई विचार करें तो महसूस होगा कि अधिकांश मान्यताओं के पीछे वैज्ञानिक सोच या समाज हित जुड़ा हुआ है।

उदाहरण के लिये प्राचीन मान्यता के अनुसार रात्रि में नाखून नहीं काटना चाहिये। इसके पीछे सोच यह रही होगी कि पहले लाइट की उपलब्धता नहीं थी, मात्र लालटेन अथवा दीपक से ही काम चलाया जाता था। यदि अंधेरे में या कम प्रकाश में नाखून काटेंगे तो उंगली कटने का डर रहता है।

रात्रि में झाड़ू नहीं लगाना - रात्रि में झाड़ू लगाने से अंधेरे में छोटे-छोटे जीव नहीं दिखेंगे तो उनका घात होने की संभावना है और हो सकता है कि कोई कीमती चीज गिर गई हो तो वह कचरे के साथ बाहर चली जायेगी।

गाय को माता के समान मानना - समाज में आज भी गाय को कई लोग माँ की उपमा देते हैं। उसको मारने को पाप समझा जाता है। गाय की पूजा की जाती है। इसका कारण यह है कि गाय मात्र नहीं बल्कि गौ वंश दूध देने का मुख्य साधन है। यदि गाय को ही मार दिया जायेगा तो दूध कहाँ से आयेगा ?

नदियों को माता की उपमा - शास्त्रों में धर्म गुरुओं ने नदियों को भी माँ माना है। हिन्दू शास्त्रों में नर्मदा मैया, गंगा मैया आदि नदियों के नाम मिलते हैं। इसके पीछे सटीक सोच यह रही होगी कि पानी मुख्य स्रोत आज भी नदियाँ ही हैं। यदि नदियों की सुरक्षा नहीं की गई, उसमें कचरा डालते रहे तो स्वच्छ पानी कैसे मिलेगा ? इसलिये नदियों को पूज्य बताया।

दही खाने से कार्य अच्छा होता है - आज भी अनेक लोग परीक्षा आदि कार्य के पूर्व घर से दही खाकर बाहर निकलते हैं। दही ठंडा होता है और इसे खाने के अनेक फायदे हैं। इससे मन शांत होता है और शांत मन से किये गये कार्य अच्छे से होते हैं।

चहकती चेतना

खड़े-खड़े खाने से अनाज का अपमान होता है - ऐसा कहकर हमारे पूर्वज अनाज के प्रति हमारे दायित्वों की याद दिलाते थे। खड़े-खड़े भोजन करने से सही तरीके से भोजन नहीं होता और भोजन यहाँ-वहाँ गिरने से जीव पैदा जाते हैं, जिससे जीव हिंसा होती है। वे झूठा छोड़ने को भी अनाज का अपमान कहते हैं क्योंकि एक किसान महीनों की मेहनत से अनाज का पैदा करता है और इस देश में हजारों लोगों को पेट भर भोजन नहीं मिलता।

तुलसी, पीपल, नीम आदि पूज्य पेड़ हैं - भारतीय हिन्दू संस्कृति में अनेक पेड़ों को भी भगवान का दर्जा दिया गया और कहा गया इसमें अनेक देवी-देवता निवास करते हैं। इसका कारण यह रहा कि वृक्ष हैं तो जीवन है। प्रत्येक घर में तुलसी के पौधे की अनिवार्यता इसलिये थी कि अनेक छोटी बीमारियों में तुलसी के पत्ते औषधि के रूप में काम में आते हैं। यदि इस तरह के वृक्ष ही नहीं रहेंगे तो शुद्ध हवा कैसे मिलेगी ? और बारिश के प्रमुख कारण में वृक्ष भी हैं। दक्षिण भारत की अनेक संस्कृतियों में नये घर के निर्माण के पहले एक नारियल का पेड़ का रोपण किया जाता था। उसी की देन है कि आज वहाँ हर घर में नारियल का पेड़ होता है।

इस तरह की सैकड़ों मान्यतायें समाज में प्रचलित हैं। लोग इन मान्यताओं को जीवन में अपनायें इसलिये धर्म के आदेश डर दिखाया गया। पर आज की पीढ़ी ने इसे अंधविश्वास कहकर छोड़ दिया पर उसके पीछे की धारणा को नहीं समझा, जिसका बुरा परिणाम यह रहा है आज पर्यावरण बिगड़ रहा है। समय पर बारिश न होना या बारिश कम होना, शहरों-गांवों में पानी की कमी, बड़े बुर्जुगों के प्रति सम्मान का अभाव, हिंसा की अधिकता जैसी समस्यायें सामने आ रहीं हैं। हम इन मान्यताओं के धार्मिक रूप में बिल्कुल न मानें, पर उनकी महत्ता को समझना और बताना हमारा दायित्व है। हम अपने बच्चों को अच्छी पढ़ाई देना तो अपना कर्तव्य समझते हैं परन्तु उन्हें सामाजिक कर्तव्य सिखाने के प्रति गंभीर नहीं हैं। आज की शिक्षा पद्धति भी प्राचीन परम्पराओं को नष्टकर आधुनिक खोखले मूल्य सिखा रही है।

अब अभिभावकों का ही कर्तव्य है कि अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा के साथ हमारे प्राचीन मूल्य, उनके उद्देश्यों का ज्ञान दें, जिससे हमारा और बच्चों का आने वाला कल बेहतर हो सके।

- विराग शास्त्री

दुष्ट

खल अहि कूर सहावो तिणमहि खल अतिकूरता होई।
अहि मंतर उराचारो दुठ उराचारो य लोयातिय दुलहो।।57।। - सुदृष्टितरंगिणी

दुष्ट व्यक्ति और सर्प दोनों क्रूर स्वभाव वाले हैं पर उनमें दुष्ट व्यक्ति अतिक्रूर होता है क्योंकि सर्प का इलाज तो मंत्र से हो सकता है, पर दुष्ट व्यक्ति का इलाज तीनों लोकों में दुर्लभ है।

इतिहास की दृष्टि में -

दिल्ली कुतुबमीनार 27 मंदिरों को तोड़कर बनाई गई हैं....

सोशल मीडिया के जमाने में हम रोज नई जानकारी ले रहे हैं। देश के अनेक भागों में खुदाई के दौरान मिलने वाली दिगम्बर जिन प्रतिमायें जैन समाज के विराट वैभव की सिद्धि करती हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि देश की राजधानी दिल्ली के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में शामिल कुतुबमीनार के बारे में ये प्रसिद्ध है कि यह पहले से बना हुआ एक मंदिर था जिसे दुबारा बनाने का विचार मुस्लिम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक को आया। सन् 1193 उसने नीचे का आधार ही बनवाया था। बाद में अगले मुस्लिम शासक इल्तुमश और फिरोजशाह तुगलक ने सन् 1368 में इसे पूरा किया। पर कैसे बनाई इसका इतिहास जानबूझकर नहीं बताया जाता है। कुतुबमीनार का असली नाम विष्णु स्तम्भ है। एक प्रमाणित शिलालेख के अनुसार कुतुबमीनार का निर्माण 27 हिन्दू और जैन मंदिरों को तोड़कर किया गया था। इसके प्रमाण के रूप में कुतुबमीनार के बाहर लगा यह शिलालेख है जो इस बात को स्वयं सिद्ध कर रहा है। है ना कमाल ..

क्या आप जानते हैं

एशिया का एकमात्र जैन सिद्धान्त भवन बिहार के आरा नगर में है। यहाँ बारहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक की 10000 से अधिक पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं।

सराक जाति और जैन धर्म

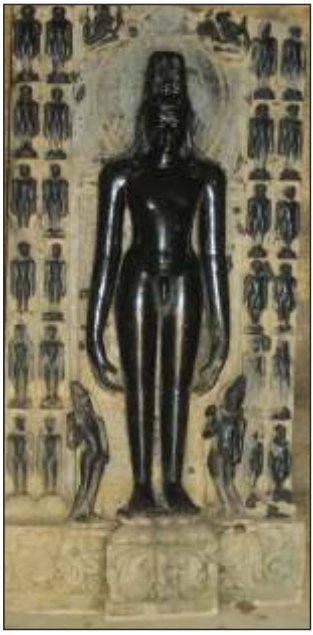

सराक जाति उत्तरप्रदेश और बिहार की तीर्थंकरों के समय की जाति रही है। मूलतः सराक जाति नहीं बल्कि जैन धर्म के सदाचारी लोगों के समूह का नाम है जिसे **श्रावक** कहा जाता था बाद में श्रावक से **सराक** कहा जाने लगा। जैन धर्म के विध्वंस में अनेक विधर्मी राजाओं का योगदान रहा। सराक जाति को मिटाने में पालवंशीय राजा गोविन्दपाल का मुख्य योगदान रहा।

सन् 1174-1176 में बिहार और बंगाल क्षेत्र में गोविन्दपाल नाम का राजा हुआ। इस राजा ने ऋजुपालिका नदी अजय नदी के किनारे पर बसे सभी शहरों में श्रमण संस्कृति के विनाश करने का अभियान चलाया। यह अभियान मृदावली (मुंगेर) से प्रारम्भ हुआ और अजय नदी के हर किनारे के हर शहर में रहने वाले जैन मंदिरों को तोड़ता और जैन मूर्तियों के स्थान पर विष्णु आदि देवों को स्थापित करता रहा। जैन धर्म के श्रावकों को धर्म परिवर्तन के लिये धमकी देता और न मानने पर उनकी हत्या तक कर दी जाती थी। इस अभियान में गोविन्दपाल ने तीर्थंकरों के नाम पर बसे गांवों को गोविन्दपुर नाम दिया। आज भी अजय नदी के तट पर कई गांवों के नाम गोविन्दपुर हैं। कई जैन मंदिरों की मूर्तियों को तोड़कर उनके स्थान पर पशु बलि स्थान बना दिये गये। हजारों जैन श्रावकों ने मजबूरी में जैन धर्म छोड़कर वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया, कई सच्चे श्रावकों ने जैन धर्म तो नहीं छोड़ा पर अपना नगर ही छोड़ दिया। इस तरह पूरे पूर्वांचल में विकसित श्रमण संस्कृति को लगभग नष्ट कर दिया।

इस इतिहास को सुनकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा -

जिन श्रेष्ठ सांधों पर सुगायक श्रुति थे घोलते।
निशी मध्य टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते।।
सोते रहो रे जैनियो हम मौज करते हैं यहाँ।
प्राचीन चिन्ह विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ ।।

कुछ सराक श्रावक उड़ीसा में जाकर बस गये। यहाँ इनकी दो जातियाँ आज भी हैं जिन्हें रंगून ताति और सराक ताति कहा जाता है। रंगून को रंगिया भी कहा जाता है। रंगिया कपड़े रंगने का कार्य करते हैं और लगभग पशुपालक हैं। यह जाति पुरी, कटक, बरहमपुर, गंजाम आदि जिलों में बहुत संख्या में हैं। ये जाति हर वर्ष खण्डगिरि और उदयगिरि की यात्रा करती है। पूर्व संस्कारों से यह जाति पूर्णतः शाकाहारी है और ये लोग रात्रि भोजन करना पाप समझते हैं। कपड़े रंगने के लिये छने जल का प्रयोग करते हैं। कपड़े रंगने के पानी को शाम होने से पहले ही मिट्टी में मिला देते हैं जिससे पूरी रात रंग के पानी में जीव हिंसा न हो। इनके यहाँ विधवा विवाह का निषेध है। कार्तिक कृष्ण अमावस्या महावीर निर्वाण दिन को दीपक जलाकर लड्डू बांटते हैं, इसे ये लोग मुक्ति दिवस व ज्ञान प्राप्ति दिवस कहते हैं। लड़कियों को लड़कों के बराबर पढ़ाते हैं। इनके गुरु नग्न होते हैं जिन्हें **अलक** कहा जाता है। ये गुरु मात्र लंगोट बांधते हैं, मोर पंख और नारियल का कमण्डल हमेशा अपने पास रखते हैं और एक बार ही हाथ में भोजन, दवाई, पानी लेते हैं।

रंगिया जाति के निवास क्षेत्रों में दिगम्बर परम्परा के जैन मंदिरों के अवशेष आज भी मिलते हैं।

पौराणिक कथा-

क्षमा में भी वीरता

गुप्त साम्राज्य मगध के अंतिम सम्राट वृहदरथ को उनके सेनापति पुष्यमित्र ने धोखे से मार डाला और स्वयं सम्राट बन गया। पुष्यमित्र को जैन धर्म से बहुत द्वेष था। इसलिये उसने सम्राट बनते ही आदेश दिया कि जो भी सैनिक अथवा नागरिक एक श्रमण जैन मुनि का मस्तक लाकर देगा उसे 100 स्वर्ण मुद्रायें पुरस्कार में दी जायेंगीं। यह घोषणा सुनकर सम्पूर्ण जैन समाज में खलबली मच गई और अपने गुरुओं का अपमान और सर्वनाश देखकर जैन साधर्मी बहुत दुःखी हो गये।

यह समाचार कलिंग सम्राट खारवेल के पास पहुँचा। सम्राट खारवेल जैन शासक था, उसे जैन धर्म और गुरुओं का बहुत बहुमान था। खारवेल ने प्रतिज्ञा की - जब तक इस अन्याय का बदला नहीं ले लूँ तब तक राजधानी लौटकर नहीं आऊँगा। सम्राट खारवेल ने मगध पर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध हुआ और इस युद्ध में पुष्यमित्र हार गया। पुष्यमित्र को बन्दी बना लिया गया। सम्राट खारवेल चाहते तो पुष्यमित्र की हत्या भी कर सकते थे पर पुष्यमित्र के क्षमा मांगने पर खारवेल ने कहा कि एक शर्त के साथ तुम्हें क्षमा कर दिया जायेगा कि जो भगवान आदिनाथ की प्रतिमा जिसे कलिंग जिनमूर्ति कहा जाता था उसे वापस कर दें। यह प्रतिमा अशोक के शासनकाल में कलिंग से उठाकर ले गये थे।

पुष्यमित्र ने इस शर्त को आदेश मानकर स्वीकार किया और बाद में कलिंग जिन प्रतिमा कलिंग वापस भेज दी और सम्राट खारवेल ने पुष्यमित्र को क्षमा कर दिया।

मन करता है

मन करता है घर-घर जाकर, जिनवाणी का पठन कराऊँ।
बाल-युवा या कि किशोर हों, सबको जिनमंदिर लाऊँ।।
देव-शास्त्र-गुरु के गुण गाकर, मिथ्यातम को दूर भगाऊँ।
तत्वज्ञान की अलख जगाकर, सम्यग्ज्ञान का दीप जलाऊँ।।

रात्रि भोजन कोई करे न, बिना छना जल कोई पिये ना।
भूखा-प्यासा और दरिद्री, इस दुनिया में कोई रहे ना।।
पाँच पाप अरु चउ कषाय से सबका ही मैं चित्त हटाऊँ।
दोष ढकूं मैं साधर्मी के, गुण गाने का भाव जगाऊँ।।

पंचेन्द्रिय के विषयों हेतु कोई जग में पाप करे ना।
न्याय-नीति से धन पद पायें, व्यर्थ कोई बकवाद करे ना।।
मंदिर-पूजा भले अलग हों, पर जिनभक्तों में प्रेम बढ़ाऊँ।
फैल रही जग में कुरीतियाँ, उन सबको मैं दूर भगाऊँ।।

निज उन्नति में सभी लगें, पर अवनति में मन न लगायें।
आतम हित की रहे भावना, जिनवचनों में चित्त रमायें।।
वीर की वाणी घर-घर गूंजे, विषय कषाय को दूर भगाऊँ।
नाम-मान व यश की खातिर, मिथ्या मत निज न फैलाऊँ।।

पर निन्दा में चित्त लगे न, प्रिय वचनों से हो व्यवहार।
करें अभक्ष्य का त्याग सभीजन, शुद्ध सात्विक करें आहार।।
भाव प्रदर्शन का न आये, सादा जीवन सदा बिताऊँ।
साधर्मीजन जो भी मिल जायें, सबको ही मैं गले लगाऊँ।।

- समर्पण

ऐसा भी वात्सल्य

वात्सल्य की भाषा ऐसी भाषा जिसे मनुष्य ही नहीं, जानवर भी समझते हैं और कई संदर्भों में मनुष्यों से कहीं अधिक। कुछ वर्ष पूर्व दक्षिण अफ्रीका की एक घटना चहकती चेतना में ही प्रकाशित हुई थी। दक्षिण अफ्रीका में एक हाथी गलती से जंगल से शहर में आ गया। वह कहीं गिरने से घायल हो गया था। एक व्यक्ति ने उसकी बहुत सेवा की और सरकार की सहायता से उसे जंगल वापस छोड़ दिया। जब वह जंगल गया तब वहाँ बहुत सारे हाथियों ने उस व्यक्ति को देखा। कुछ वर्ष बाद उस व्यक्ति की मौत हो गई और उसकी शवयात्रा में जंगल से लगभग 200 हाथी आश्चर्यजनक रूप से वहाँ पहुँच गये। जिस हाथी की उस व्यक्ति ने सेवा की थी वह हाथी बहुत रोया।

इसी तरह एक घटना अभी चेन्नई में हुई है। चेन्नई के वेपमपट्टू क्षेत्र में रहने वाले श्री गंगाराम जी उपाध्याय रोज एक गाय को रोटी खिलाते थे। रोज निश्चित समय पर गाय उनका इंतजार करती और वे भी समय पर उसके लिये रोटी लेकर जाते थे। यह क्रम वर्षों तक चलता रहा। 27 जून 2019 को गंगारामजी की मृत्यु हो गई। न जाने गाय को कैसे आभास हो गया और वह उनके घर पहुँच गई। वह गाय उनकी शवयात्रा में उनके घर से श्मशान घाट तक गई और जब तक अंतिम संस्कार पूरा नहीं हो गया तब वहीं बैठी रही।

सच्ची बात

गंगा के किनारे एक नाविक लोगों को नाव में बिठाकर नदी नदी के दूसरे घाट ले जाता था। उसका यही काम था, इससे जो रुपये मिलते, उससे उसके परिवार का काम चलता था। एक दिन गंगा नदी की बाढ़ में नाव चलाते हुये उसके दो लड़के डूबकर मर गये। कुछ दिन बाद एक पण्डित ने उस नाविक से पूछा - भाई! झब इसी गंगा में तुम्हारे दो बेटे डूबकर मर गये तो तुम्हें अपने डूबने का डर नहीं लगता ? उस नाविक ने भोलेपन से उत्तर दिया - पण्डितजी! जिसकी आयु जब खत्म होती है तभी वह मरता है। बीमारी के या डूबने के तो बहाने मिल जाते हैं। यही सच्ची बात है।

पण्डितजी यह सुनकर मन में सोचने लगे कि पण्डित मैं हूँ और अनपढ़ होने पर भी ज्ञान इस नाविक को है।

अंतिम सत्य

ये तस्वीर चीन के हेनन हॉस्पिटल की है। हॉस्पिटल के फर्श पर रुपये बिखरे पड़े हैं। इसके पीछे एक विशेष घटना है। एक महिला को कैंसर हो गया था और उसका कई महीनों से इलाज चल रहा था। एक दिन वह नोटों से भरा बैग हॉस्पिटल लेकर आई और उसने डॉक्टर से कहा - आपको देने के लिये मेरे पास बहुत रुपये हैं। आप जितने मांगोगे, मैं दे दूँगी। पर डॉक्टर ने जीवन की उम्मीद कम होने की बात कही। आपका कैंसर अंतिम स्टेज पर है और आपका इलाज अब संभव नहीं है। उस महिला को डॉक्टर की यह बात सुनकर बहुत क्रोध आया वह पागलों की तरह चीखने लगी और पूरे हॉस्पिटल में नोट फेंकते हुये बोलती रही - क्या फायदा ऐसी दौलत का, जो मुझे जीवन नहीं दे सकती ? क्या फायदा मेरे इतने अमीर होने का, जो मेरा इलाज नहीं कर सकती ?

अस्पताल के डॉक्टर और कर्मचारी चुपचाप यह दृश्य देखते रहे। हमें भी विचार करना चाहिये कि हम जीवन की भाग दौड़ मात्र धन कमाने के लिये कर रहे हैं। कुछ समय अपने लिये निकालें और सर्वज्ञ भगवान के वचनों का अध्ययन, मनन, चिन्तन और अनुभव करें।

चैतन्य बाल भास्कर प्रतियोगिता के प्रति समाज में जबरदस्त उत्साह
अंतिम तिथि अब 31 जुलाई 2019

समाज के बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा जाग्रत करने के उद्देश्य से आयोजित चैतन्य बाल भास्कर प्रतियोगिता के प्रति बच्चों में जबरदस्त उत्साह देखा जा रहा है। लगभग 9000 बच्चों तक पहुँची इस प्रतियोगिता को पूर्ण कर अनेक बच्चों ने अपना चैतन्य बाल भास्कर भेज दिया है। अनेक बच्चों के अनुरोध पर इस प्रतियोगिता को भरकर भेजने की अंतिम तिथि अब 31 जुलाई 2019 कर दी गई है। इस प्रतियोगिता में देश के अनेक साधर्मियों के साथ श्रीमति आरती पुष्पराज जैन-कन्नौज, श्री मांगीलाल जैन चन्दन-मुम्बई, श्री आई.एस.जैन-मुम्बई, श्री साकेत कमल बड़जात्या-मुम्बई, श्री निशिकांत जैन-औरंगाबाद, श्रीमति भविशा आत्मदीप भायाणी-चेन्नई, श्री प्रेमचन्दजी बजाज-कोटा श्री राजूभाई दादर, मुम्बई का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है।

हमारे जैन महापुरुष -

साहू टोडरजी

जैन समाज के अनेकों महापुरुषों ने अपने आचरण से सदा समाज में आदर्श प्रस्तुत किया है। ऐसे ही महापुरुषों में एक थे - साहु टोडरजी।

अर्गलपुर आगरा में पासा पार्श्व साहू नाम प्रसिद्ध जैन श्रावक थे। ये बहुत संयमी, चारित्रवान और अनेक गुण सम्पन्न थे। इन्ही के पुत्र का नाम साहु टोडरजी था। ये बादशाह अकबर के उच्च अधिकारी कृष्णमंगल चौधरी के विश्वासपात्र मन्त्री थे और आगरा के सरकारी सिक्के के कारखाने के प्रमुख थे। साहु टोडर बहुत विद्वान, दयालु और सम्पन्न व्यक्ति थे। उन्होंने बादशाह अकबर से आज्ञा लेकर बहुत राशि खर्च कर मथुरा के प्राचीन जैन तीर्थ का उद्धार किया और प्राचीन स्तूपों के जीर्ण-शीर्ण हो जाने पर 514 नये स्तूपों का निर्माण कराया। सन् 1573 में बहुत धूमधाम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आयोजन भी किया। इन्होंने सन् 1575 में आगरा में भी एक विशाल जिनमंदिर बनवाया। प्रसिद्ध जैन विद्वान पाण्डे राजमल्लजी से इनका अच्छा परिचय था। इन्हीं के आग्रह पर पाण्डे राजमल्लजी ने जम्बूस्वामी चरित ग्रन्थ की रचना की। इनके पुत्र साहु ऋषभदास भी बहुत धर्मात्मा और विद्वान श्रावक थे। इनकी प्रेरणा से पण्डित नयविलास ने आचार्य शुभचन्द्र द्वारा रचित ज्ञानार्णव ग्रन्थ की टीका लिखी थी।

ऐसे ही एक और महापुरुष थे - पण्डित प्रभुदासजी।

बिहार के आरा नगर के अग्रवाल जैन परिवार के पण्डित प्रभुदासजी बहुत सम्पन्न जमीदार थे। सम्पन्न होने के साथ ही वे धार्मिक, संस्कृत के जानकार, शास्त्रों के ज्ञाता, चारित्रवान, दानी और दयालु व्यक्ति थे। विद्वता के कारण इन्हें लोग बाबू कहकर बुलाते थे। ये समाज के शुभचिन्तक थे और समाज के साधर्मियों की आवश्यकता होने पर भरपूर सहायता करते थे। इन्होंने 1856 में वाराणसी में गंगा नदी के किनारे भदैनी घाट पर भगवान सुपार्श्वनाथ का मंदिर बनवाया और धर्मशाला भी बनवाई। इसी के साथ वाराणसी में भगवान चन्द्रप्रभ की जन्मभूमि चन्द्रपुरी में गंगा के तट पर सुन्दर जिनमंदिर बनवाया था।

सन् 1834 में पण्डित प्रभुदास का परिचय छहढ़ाला के रचनाकार पण्डित दौलतरामजी से परिचय हुआ। पण्डित प्रभुदास पण्डित दौलतरामजी का बहुत आदर करते थे। पण्डित प्रभुदासजी इतने संयमी थे कि उन्होंने 40 वर्ष तक एक समय ही भोजन लिया। इनका निधन चौंसठ वर्ष की आयु में हुआ। इनके एकमात्र पुत्र चन्द्रकुमार थे। इन्होंने पिता के आदर्शों पर चलते हुये कौशाम्बी में जिनमंदिर बनवाया परन्तु मात्र 31 वर्ष की आयु में ही इनका स्वर्गवास हो गया।

मोबाइल गेम के टास्क लक्ष्य ने ली बच्चे की जान

मोबाइल पर खेले जाने गेम अब मनोरंजन की जगह जान का कारण बन रहे हैं। कोटा के विज्ञान नगर में रहने वाले 12 साल के खुशाल को गेम खेलने की लत थी। माता-पिता भी बच्चे की जिद और रोने को देखकर उसे अपना मोबाइल दे देते थे। 19 जून को खुशाल अपने कमरे में ऑनलाइन गेम खेल रहा था और परिवार दूसरे काम में व्यस्त था। खेलते हुये खुशाल को गेम में एक टास्क पूरा करने को कहा गया। जिसमें गले में मंगल सूत्र और हाथों में चूड़ियाँ पहनना था और लोहे की जंजीर पहनकर फांसी लगाने का टास्क था। उसने ऐसा करते हुये फांसी लगा ली। सुबह खुशाल जब अपने कमरे से बाहर नहीं आया तो परिवार के एक सदस्य ने खुशाल के बाथरूम में जाकर देखा तो उसकी चीख निकल गई। खुशाल मंगलसूत्र और चूड़ियाँ पहने हुये फांसी पर लटका हुआ था। अपने इकलौते बेटे की मौत देखकर माता-पिता बेहोश हो गये।

माता - पिता की अनदेखी और मोबाइल के एक गेम ने एक बालक की जान ले ली।

अब टिक टॉक नई बीमारी - अब सोशल मीडिया पर टिक टॉक एक नई बीमारी बन गया है। लोगों को हंसाने और उनका मनोरंजन करने के लिये लोग अपनी विचित्र हरकतों को टिक टॉक से वीडिया बना रहे हैं और इस चक्कर में अपने प्राण भी गंवा रहे हैं। जून माह की अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार पिछले कुछ महीनों में पूरे विश्व में लगभग 2000 लोगों ने टिक टॉक वीडियो बनाते समय लापरवाही से अपन प्राण गंवा दिये। इनमें मरने वाले सबसे ज्यादा लोग भारत के हैं। इनमें से अधिकांश मौत पानी में डूबने से, ट्रेन से कटने से और सड़कों पर हुईं हैं।

अभी 17 जून को कर्नाटक के तुमकुरु जिले का 22 वर्ष का कुमार अपने दोस्तों के साथ मैदान पर घूम रहा था। तभी उन्हें टिकटॉक वीडियो बनाने का विचार आया। एक दोस्त वीडियो बनाने लगा और दूसरा दोस्त अपनी हथेली सामने करके खड़ा हो गया। इस स्टंट में कुमार को दूर से दौड़ते हुये आकर हथेली पर एक पैर रखकर ऊपर उछलकर नीचे आना था। इस घटना में कुमार दौड़ता हुआ आया और पर बेलेन्स बिगड़ने के कारण रीढ़ की हड्डी के बल पर नीचे गिरा और गर्दन के नीचे से हड्डी टूट

गई। हॉस्पिटल में 8 दिन तक मौत से संघर्ष करने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। कुमार आर्केस्ट्रा में सिंगर और डांसर के रूप में काम करता था और परिवार में एक मात्र कमाने वाला व्यक्ति था। इंडियन एक्सप्रेस की खबर के अनुसार परिवार ने बताया कि कुमार के पास स्मार्ट फोन नहीं था, उसके दोस्त अपने फोन से वीडियो बना रहे थे।

अब ये नई समस्या - लगातार झुककर स्मार्ट फोन देखने के कारण गर्दन में एक नुकीली हड्डी विकसित हो रही है। इसे टेक्स्ट नेक नाम दिया गया है। इसका आकार 2.06 सेमी तक देखा जा रहा है। यह समस्या सबसे अधिक 16 साल से 30 साल तक के युवाओं में अधिक देखी जा रही है। अधिक मोबाइल या लेपटॉप के प्रयोग के कारण युवाओं का शरीर का आकार, पीठ का घुमावदार होना और गर्दन दर्द जैसी शिकायतें आ रहीं हैं।

शोधकर्ता डॉ. डेविड सहर के अनुसार सिर का वजन लगभग 5 किलो होता है और गर्दन से पीठ की ओर जाने वाली मांसपेशियों का अधिक प्रयोग होता है। बहुत देर तक झुके रहने के कारण बच्चों की रीढ़ की हड्डी का आकार बदल रहा है। इसके कारण सिर दर्द, बैकपेन, गर्दन दर्द के साथ कंधों के दर्द की समस्या बढ़ रही है।

हर व्यक्ति औसत लगभग 12 मिनिट में एक बार फोन चेक करता है और एक सप्ताह में 24 घंटे फोन पर व्यतीत करता है। मोबाइल फोन का बढ़ता एडिक्शन ही कई समस्याओं का कारण है।

तेजी से बढ़ता मोबाइल का प्रयोग जानकारी देगा, पर समस्याओं के साथ। विचार आपको करना है...

प्रसंग जो प्रेरणा देते हैं

नजरिया

माँ! कचरे वाला आया है, कचरा दे दो।

बेटा! ऐसा नहीं बोलते, कचरे वाले तो हम हैं, वो तो सफाई वाला है। जैसे सब्जी वाला सब्जी रखता है, किराना वाला किराना रखता है, दूधवाला दूध रखता तो हम कचरे रखने वाले क्या हुये कचरे वाले ना... और वह तो सफाई करने वाला है तो सफाईवाला वही हुआ ना।

यह बात सुनकर बेटा माँ को देखता ही रह गया।

पबजी हारने पर लगा झटका
16 वर्ष के लड़के हार्ट अटैक से मौत

16 वर्षीय लड़का रात 2 बजे से लगातार 6 घंटे खेलता रहा पबजी, हारने के बाद हार्टअटैक, मौत

पिता ने बताया- मरने से पहले चिल्लाया 'ब्लास्ट कर', 'ब्लास्ट कर'...

मोबाइल सुविधा है पर उसका दुरुपयोग कितना खतरनाक हो सकता है, आज कल बच्चे-युवा समय की बरबादी करते हुये मोबाइल पर गेम खेलते हैं, धीरे-धीरे गेम उनकी लत बन जाता है। वे अपने को स्वयं को गेम से इतना जोड़ लेते हैं कि उसे ही जीवन समझने लगते हैं। इसका अंदाजा इस घटना से लगता कि मोबाइल पर लगातार गेम खेलना और इसमें हारने पर हार्ट अटैक आने से मौत हो गई। राजस्थान के अजमेर शहर का फुरकान शादी में नीमच आया था। 27 मई की रात में लगातार 6 घंटे तक गेम खेलता रहा और बाद में ब्लास्ट ब्लास्ट चिल्लाया और दिल का दौरा पड़ने से उसकी मौत हो गई। बाद में उसकी बहन में बताया वह लगातार गेम खेल रहा था वह पबजी गेम हार गया। डॉ. अशोक जैन ने बताया दिल का दौरा पड़ने के बाद लड़के को जब यहाँ लाया गया तब उसकी हृदय की गति बन्द हो चुकी थी। उसे इलेक्ट्रिक शॉक दिये, पपिंग भी की, पर कोई फायदा नहीं हुआ।

बच्चों को मोबाइल देना एक ग्राम कोकीन नशीली चीज देने के बराबर है। - मैंडी सालगिरी विश्व प्रसिद्ध एडिक्शन थैरेपिस्ट

जो छोटे बच्चे मोबाइल से खेलते हैं, वो देर से बोलना शुरु करते हैं। टाइम मैगजीन के एक सर्वे के अनुसार लंबे समय तक मोबाइल के प्रयोग से ब्रेन ट्यूमर होने का खतरा - एम्स राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भारत का एक सर्वे मोबाइल बच्चों में ड्राइ आइज की बड़ी वजह। - दक्षिण कोरियाई वैज्ञानिक

क्या आपको पता है कि दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में एक बिल गेट्स ने अपने बच्चों को 14 साल की उम्र तक मोबाइल नहीं दिया था। इसी तरह आई फोन के आविष्कारक स्टीव जॉब्स ने बताया था कि उन्होंने कभी अपने बच्चों को आई पेड का प्रयोग नहीं करने दिया। ये दो उदाहण मात्र इसलिये कि मोबाइल जीवन की सबसे बड़ी आवश्यक वस्तु नहीं है।

मोबाइल हमारे घरों की दीवारें बन रहा है। यह बच्चों को अपने तक ही सीमित कर देता है। अगर आप चाहते हैं कि बच्चे खुलकर जियें और उन्हें नकली खुशी देने के बजाय अपना समय दें। मोबाइल को नियंत्रित करिये और बच्चों को इससे आजाद।

ऐतिहासिक वीर नारियाँ -

मल्लिका

जैन शासन में कई ऐसी नारियाँ हुईं जिनके त्याग और पवित्रता से आदर्श जीवन की प्रेरणा मिलती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण इन्हें देवी की उपमा दी जाती है।

मल्लिका मिथिला के सम्राट कुम्भ की बेटी थी जो कि अत्यन्त सुन्दर और विदुषी थी। पड़ोसी राज्यों क सभी सम्राट उससे विवाह के लिये उत्सुक थे। उसे प्राप्त करने के लिये राजाओं ने मिलकर मिथिला पर आक्रमण कर दिया। जब राजा कुम्भ पराजित होने लगा तो मल्लिका ने अपने पिता से प्रार्थना की वह उन सभी आक्रमण करने वाले राजाओं से मिलना चाहती है। कुम्भ के निवेदन पर राजाओं ने युद्ध रोक दिया और मिलकर मल्लिका से मिलने पहुँच गये। जब वे सब मल्लिका के कक्ष में प्रवेश किया तो राजकुमारी की अपूर्व सुन्दरता देखकर एकटक उसे देखते रहे। तभी सबने देखा कि एक और मल्लिका कमरे में प्रवेश कर रही थी। पहले जिसे मल्लिका समझ रहे थे वह तो मल्लिका की प्रतिमा थी।

मल्लिका ने कमरे में प्रवेश करने के बाद प्रतिमा के सिर से ढक्कन उठा दिया। ढक्कन को अलग करते ही पूरे कमरे में गन्दी बदबू भर गई। मल्लिका ने उस मूर्ति के अन्दर पाँच दिन पहले मिठाई,पूरी, रसगुल्ले आदि व्यंजन भर दिये थे और वही सारी सामग्री सड़ गई और उससे दुर्गन्ध आने लगी थी। सभी राजाओं ने नाक पर कपड़ा रख लिया। मल्लिका ने उन राजाओं को कहा - जिस शरीर के पीछे आप पागल होकर युद्ध कर रहे हो उस शरीर के अन्दर कितनी गन्दगी भरी थी। राजा यह सुनकर शर्मिन्दा हो गये। इसके बाद मल्लिका ने आर्यिका व्रत धारण कर लिया और सभी राजा युद्ध को रोककर अपने-अपने राज्य वापस चले गये। ऐसी थी हमारी वीर मल्लिका।

अम्बिका

ऐसी ही एक नारी थी - अम्बिका। अम्बिका सौराष्ट्र में कांडीनार नामक गांव में एक ब्राह्मण की पत्नी थी। वह अधिक पढ़ी - लिखी नहीं थी पर बहुत सदाचारी और धर्म पालन करने वाली महिला थी। अम्बिका ने एक बार भक्तिवश एक मुनिराज को आहार दिया। जब उसके पति को मालूम चला तो उसे बहुत क्रोध आया कि अम्बिका ने ब्राह्मण होकर जैन मुनि को आहार दिया। उसने अम्बिका को घर से बाहर निकाल दिया। बाद में उसके पति का क्रोध शांत हुआ तो वह अपनी पत्नी को वापस लाने के लिये उसे ढूंढने लगा। उसकी पत्नी गांव के बाहर बैठी हुई थी। जैसे ही उसने अपने पति को देखा तो उसे लगा कि उसका पति उसे मारने के लिये आ रहा है। वह वहाँ से भागी और भागते समय उसका पैर फिसल गया और वह कुंये में गिरकर मर गई।

बाद में यही अम्बिका ने स्वर्ग में देवी पद प्राप्त किया।

यात्रा वृतांत

दक्षिण भारत का जैनत्व वैभव

कहते हैं कि एक समय में दक्षिण भारत में इतने जैन मंदिर थे कि यदि आप आंख बन्द करके किसी भी दिशा में पत्थर फेंकें वह निश्चित जैन मंदिर पर ही गिरेगा। यह जैन मंदिरों की विशाल संख्या और जैनत्व वैभव को बताने के लिये एक उदाहरण था। लेकिन अभी पुणे में आयोजित बाल संस्कार शिविर के बाद मुझे ही संयोगवश महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ मंदिरों के दर्शन का सुयोग प्राप्त हुआ। साधर्मियों से चर्चा में पता चला कि यहाँ लगभग प्रत्येक छोटे से गांव में भी एक दिगम्बर जिनमंदिर तो अवश्य है।

जिनदर्शन भावना और अपने कार्य से हेरले, जयसिंगपुर, कागवाड़ा, शेडवाड, कोल्हापुर, सांगली, म्हैसाल आदि अनेक नगरों के विराजमान जिनेन्द्र भगवान के दर्शन का सुयोग हुआ। मेरे साथ भाई प्रसन्न शास्त्री भी थे । कागवाड़ा में तो जमीन से लगभग 15 फुट नीचे विराजमान जिनमंदिर अद्भुत है। जाने का रास्ता भी इतना संकरा और छोटा है कि उसमें बैठकर ही जा सकते हैं और वो भी अपने को सिकोड़कर। ऊपर से देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि कोई जमीन के नीचे भव्य वेदी पर जिनेन्द्र परमात्मा की दर्शन होंगे। नीचे प्रथम तल एक वेदी पर भगवान शांतिनाथ और द्वितीय तल पर एक वेदी पर भगवान पार्श्वनाथ विराजमान हैं। हमारे पूर्वज जैन साधर्मियों ने न जाने किन परिस्थितियों में इनकी स्थापना की होगी । यह तो अज्ञात है पर उनकी जिनदर्शन की उत्कृष्ट भावना का परिचय मिलता है।

कोल्हापुर यात्रा के पूर्व अनेक बार सुना था कि यहाँ का प्रसिद्ध अम्बा माता का मंदिर पूर्व में दिगम्बर जिनमंदिर था। अम्बा माता का मंदिर सम्पूर्ण महाराष्ट्र के प्रसिद्ध हिन्दू मंदिरों में बहुत महत्वपूर्ण मंदिर है। अम्बा माता को तिरुपति बालाजी की पत्नी की मान्यता प्राप्त है। ज्ञात हो तिरुपति बालाजी प्राचीन समय में भगवान नेमिनाथ का दिगम्बर जिनमंदिर था। अम्बा माता मंदिर में हर दिन सैकड़ों लोग दर्शन के लिये आते हैं। कौतुहलवश वहाँ जाना हुआ तो यह देखकर आश्चर्य और दुःख के साथ हमारी जैन विरासत पर गर्व भी हुआ। मैंने देखा कि मंदिर की दीवालों पर दिगम्बर जिनप्रतिमायें उत्कीर्ण हैं और मंदिर के ही एक बंद कमरे में ऊपर की दीवालों पर चौबीस तीर्थंकरों की खड्गासन प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं। इस मंदिर के पुराने समय में जैन मंदिर होने के ये पर्याप्त प्रमाण हैं। सम्पूर्ण मंदिर काले पाषाण का बना हुआ है पर आश्चर्य की बात है कि शिखर चूने का बना है। इससे लगता है कि संभवतः शिखर पर दिगम्बर जिनप्रतिमाओं की कुछ रचना होगी और जैन मंदिर की पहचान मिटाने के लिये उस प्राचीन शिखर को तोड़कर ये नया शिखर बनाया गया होगा। इस मंदिर के बारे में एक और विशेष बात यह है कि वर्ष में एक निश्चित दिन पर सूर्य की किरणें बहुत दूरी से सीधे मूल प्रतिमा के मस्तक पर पड़ती हैं। इस दिन को सूर्यकिरणोत्सव के नाम से मनाया जाता है।

यह माहात्म्य कम न हो इसलिये प्रशासन द्वारा मंदिर के सामने की सड़क पर कई मीटर की दूरी पर बड़ी बिल्डिंग बनाने पर रोक लगी है। यात्रा के दौरान कोल्हापुर के प्रसिद्ध जैन मठ में विराजमान जिनेन्द्र भगवन्तों के दर्शन का अवसर मिला। यह संभवतः कोल्हापुर का सबसे प्राचीन जिनमंदिर है। देश के सबसे वरिष्ठ भट्टारक श्री लक्ष्मीसेनजी से सौजन्य मुलाकात हुई। दुखद बात यह रही कि हमारी मुलाकात के मात्र 5 दिन बाद ही भट्टारकजी का देहावसान हो गया । इन समस्त तीर्थों की एक विशेषता यह रही है कि यहाँ लगभग हर जिनालय में मानस्तंभ की रचना है और सभी मानस्तंभ लगभग एक ही डिजाइन के हैं।

महाराष्ट्र और कर्नाटक के इन प्राचीन जिनमंदिरों के वैभव को देखकर सहज जिनेन्द्र भगवान की भक्ति और पूर्वजों के प्रति बहुमान से सिर झुक जाता है।

- विराग शास्त्री

चहकती चेतना

बाल शिविर

कार्यक्रमों की झलकियाँ

बाल शिविर कार्यक्रमों की झलकियाँ

अब नहीं देखूँगा

अरे चिन्तन! कल रविवार है, कल क्रिकेट खेलने जरुर आना..।

नहीं यार धार्मिक! कल खेलने नहीं पाऊँगा..।

क्यों? कल कोई खास प्रोग्राम है तो मुझे भी ले चलो...

हाँ हाँ क्यों नहीं.. कल मैं अपने परिवार के साथ फिल्म देखने जा रहा हूँ

अच्छा.... कौन सी फिल्म ?

'कबीर सिंह' सुना है बहुत ही शानदार फिल्म है।

तुझे कैसे पता कि शानदार फिल्म है ?

अरे धार्मिक! इस फिल्म ने एक सप्ताह में ही 100 करोड़ की कमाई कर ली है। लोग हीरो की एक्टिंग की बहुत तारीफ कर रहे हैं।

चिन्तन! मुझे ये बताओ की शानदार फिल्म की परिभाषा क्या है ?

शानदार मतलब... मनोरंजक फिल्म। तुम साथ चलोगे तो बहुत मजा आयेगा। वैसे भी मेरी फेमिली में मुझे कंपनी (साथ) देने वाला कोई नहीं है। तुम साथ चलोगे ना...।

नहीं चिन्तन! मैं तुम्हारी बात से सहमत नहीं हूँ। मैंने भी फिल्म का ट्रेलर देखा है। बहुत गंदी और बकवास फिल्म है।

(हंसते हुये) अरे वाह! तुम तो बिना देखे ही फिल्मों की समीक्षा करने लगे। तुम्हें तो न्यूज पेपर में कॉलम लिखना चाहिये। जिस फिल्म ने 200 करोड़ की कमाई कर ली हो वह तुम्हें बकवास फिल्म लग रही है।

मैं मजाक नहीं कर रहा। 200 करोड़ की कमाई अच्छी फिल्म की परिभाषा नहीं है। जगत में मूर्खों और भोगियों की कमी नहीं है।

अरे! अब तुम तो पण्डित भी बन गये। जरा विस्तार से समझायेंगे पण्डित धार्मिकजी.. आप इस फिल्म को कैसे खराब कह रहे हैं?

मैं ऐसी एक फिल्म की नहीं बल्कि ऐसी सारी फिल्मों की बात कर रहा हूँ। जिन फिल्मों में मारपीट, अश्लीलता, संस्कारों से विपरीत, शराब-सिगरेट के सीन हों, उसे हम कैसे अच्छी फिल्म कैसे कह सकते हैं ? और सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसी फिल्मों से समाज को क्या संदेश मिलता है-किसी की बहन को उठाकर ले आओ, उसे सरेआम छेड़ो, उसका अपमान करो, मारो पीटो।

हमें इससे क्या मतलब..? हमें तो मात्र तीन घंटे का मनोरंजन चाहिये।

यह मनोरंजन नहीं, बरबादी है अपनी भी और अपने संस्कारों की भी। आज समाज में बलात्कार, लड़कियों को छेड़ने की घटनायें बढ़ती जा रहीं हैं। 6 माह तक की मासूम बच्चियों से बलात्कार किये जा रहे हैं। अनैतिकता के गन्दे वातावरण बनाने में इन फिल्मों का सबसे बड़ा योगदान है और इस काम में हम भी शामिल हैं।

कैसी बातें करते हो धार्मिक! हमारे संस्कार ऐसे नहीं हैं...।

जानता हूँ पर हमारी अनुमोदना तो है ऐसे काम के लिये। हम इन गन्दी फिल्मों को देखते हैं और फिल्म को सफलता मिलती है तो इन पाप के कामों में हमारी भी अनुमोदना हुई ना..। मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ कि यदि कोई हमारी बहन को गन्दी नजर से देखे या कुछ गलत बोले तो क्या हम सहन कर पायेंगे ?

बिल्कुल नहीं। पकड़कर उसको पीटेंगे।

तो जो कार्य हमें पसन्द नहीं है उसकी अनुमोदना क्यों? जब फिल्म देखकर आओगे तो उसकी बातें अपने दोस्तों से करोगे। इससे ही अपराध बढ रहे हैं।

तुम्हारी बात में दम तो है। भाई! ऐसे तो फिल्में देखना ही बन्द करना पड़ेगा..।

भाई! मैं फिल्म देखने से मना नहीं करता, पर उसमें समाज के हित का कोई सार्थक संदेश होना चाहिये। इस तरह की फिल्म देखने से सप्त व्यसन का महापाप लगता है। सच बात तो यह है फिल्में न देखी जायें तो ही अच्छा है। न देखना और न किसी को दिखाना। वैसे ही हमारे जीवन में इतने पाप होते हैं और पापों को जानबूझकर क्यों बढ़ाना ?

धार्मिक भाई! तुम्हारी बात में सच्चाई है और ऐसी फिल्में देखकर सामाजिक अपराध कर रहे हैं... ऐसा तो मैंने कभी सोचा ही नहीं।

और एक बात चिन्तन। हमारे रुपयों का ये फिल्म वाले क्या करेंगे? कोई अनाथालय, हॉस्पिटल या स्कूल नहीं खोलेंगे बल्कि शराब, कुशील, मांस सेवन जैसे महापाप में ही खर्च करेंगे।

हाँ! ये बात भी है। तो भाई...! आज से नियम लिया कि मैं ऐसी गन्दी फिल्में कभी नहीं देखूँगा और न किसी को दिखाऊँगा।

तो कल का क्रिकेट पक्का...

हाँ यार पक्का। दोस्त हो तो तुम्हारे जैसा। चिन्तन ने जोर से हंसते हुये कहा।

जिन

जो सहस्स सहस्साणं संगामे दुज्जये जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस सो परमो जयो।।

जो युद्ध में हजारों लोगों को जीतते हैं वे विजेता नहीं हैं बल्कि जो एक मात्र अपने आपको जीतते वही सच्चे विजेता हैं।

अद्भुत धर्म अनुराग

पात्र - एयरपोर्ट अधिकारी, हरिलालजी, साथ में दो साधर्मी

सहायक सामग्री - छोटे-बड़े 4 बॉक्स

सूत्रधार - यह घटना सन् 1947 के स्वतंत्रता के पहले की है। भारत और पाकिस्तान का विभाजन हो रहा था। लोग अपने प्राणों की रक्षा की चिन्ता कर रहे थे तो धर्म क्षेत्रों की रक्षा कौन करे ? पाकिस्तान के मुलतान नगर में अनेक जैन साधर्मी रहा करते थे। उन्होंनें जिनेन्द्र भगवान की आराधना के लिये जिनमंदिर बनाया था। विभाजन के समय उनसे भी कहा गया कि वे भी पाकिस्तान छोड़कर शीघ्र हिन्दुस्तान भारत चले जायें। वे जैन साधर्मी आर्थिक रूप से बहुत सम्पन्न थे इसलिये उन्होंने हिन्दुस्तान जाने के लिये एक प्लेन हवाई जहाज बुक कर लिया आज जो भी सामान ले जा सकते थे उसे लेकर हवाई अड्डे पर आ गये।

दृश्य प्रारम्भ - मंच के पीछे पर्दे पर हवाई अड्डे का दृश्य है। दो सदस्यों के साथ हरिलालजी वहाँ खड़े हैं। इतने में एयरपोर्ट अधिकारी, का आगमन होता है।

अधिकारी - हिन्दुस्तान जाने वाले भाईयो! आपका मुखिया कौन है? मुझे उससे कुछ जरूरी बात करना है।

हरिलालजी - बोलिये साहब! मैं हूँ मुखिया। कहिये क्या बात है?

अधिकारी - भाईजी! बात यह है कि आपके सभी सदस्य तो हवाई जहाज में आ जायेंगे पर आपका सामान बहुत ज्यादा है, ऐसा कीजिये, जो भारी-भारी बक्से हैं, इन बक्सों को कम कर दीजिये।

हरिलालजी - नहीं साहब। हम ये बक्से कम नहीं कर सकते। आप कहें तो हम अपनी सारी दौलत, कपड़े और अन्य सामान यहीं छोड़ देते हैं पर इन बक्सों को नहीं छोड़ सकते। इन बड़े बक्सों में तो अनमोल निधि है, ये तो बहुत कीमती हैं।

अधिकारी - आश्चर्य से - भाईजी! हीरे मोती से अधिक कीमती क्या हो सकता है? आखिर इन बक्सों में क्या है ?

हरिलालजी - साहब! क्या बतायें? हमें मुलतान नगर के साथ अपना जिनमंदिर भी छोड़कर जाना पड़ रहा है। हम जिनमंदिर तो साथ नहीं ले जा सकते परन्तु हम अपने साथ भगवान की प्रतिमाओं और शास्त्रों को ले जा रहे हैं। यदि इन्हें यहाँ छोड़ देंगे तो इनकी बहुत अविनय होगी।

अधिकारी - वाह ! बहुत उत्तम विचार हैं भाई जी ! आप

लोगों के। लेकिन इन बड़े बॉक्स के बदले में आपको अपना बहुत सामान कम करना होगा।

हरिलालजी - जी! हम इसके लिये तैयार हैं। हमारे भगवान और शास्त्रों के बॉक्स छोड़कर आप जो भी कम करना चाहें कम कर दीजिये। आपका हम पर बहुत उपकार होगा।

अधिकारी - धन्य है भाईजी! आप सब धन्य हैं। आपका जैन धर्म बहुत महान है जो आपको ऐसी शिक्षा देता है।

सूत्रधार - और मुलतानवासियों के धन-दौलत के बॉक्स वहीं रह गये लेकिन मुलतान से भारत आने वाले साधर्मियों को अपनी सम्पत्ति छूट जाने का कोई दुःख नहीं था बल्कि उन्हें इस बात की बहुत खुशी थी कि जिनप्रतिमायें और शास्त्र उनके साथ हैं।

हिन्दुस्तान में वे जयपुर आ गये और आने के बाद उन्हें शरणार्थी केम्प में रहना पड़ा। अनेक समस्याओं का सामना किया। उस समय उनके पास धन, दुकान, मकान कुछ भी नहीं था। जो थोड़ा बहुत धन था उससे अपना व्यापार आदि प्रारम्भ किया और बाद में जयपुर के आदर्श नगर में विशाल जिनमंदिर बनवाया और उसमें विधिपूर्वक जिनप्रतिमाओं और शास्त्रों को विराजमान किया।

प्रश्न - वे मुलतानवासी तो अपनी सारी धन-दौलत मुलतान में ही छोड़कर आये तो वे बहुत गरीब परिस्थितियों में होंगे ?

उत्तर आपके सामने है - मुलतानवासी धन-दौलत छोड़कर अवश्य आये थे लेकिन सच्चे देव-शास्त्र-गुरू के प्रति धर्मानुराग होने से वे अपना पुण्य भी साथ लाये थे। ऐसा समर्पण भाव होने के कारण उनके तीव्र पुण्य का उदय आया और आपको जानकर आश्चर्य होगा कि आज मुलतान से आये हुये जैन साधर्मी और उनके वंशज आज जैन समाज के सम्पन्न लोगों में हैं। आज भी आदर्श नगर का यह जिनमंदिर मुलतान दिगम्बर जैन मंदिर के नाम से जाना जाता है।

विदुषी ब्र. आरती जैन, छिन्दवाड़ा

बीमार कौन

बीमार बूढ़ी माँ ने कांपते हाथों से अपनी दवा की पर्ची बेटे को दी और एक मुड़ा हुआ नोट साथ में दिया और बेटे ने भी तुरन्त पहले नोट पकड़ा फिर दवा की पर्ची। तब लगा बीमार माँ नहीं, बेटा है।

चहकती चेतना

प्रेरक प्रसंग -

त्याग

एक नगर मे धनदत्त नामक का एक ब्राह्मण रहता था। एक बार कहीं जाते समय वह बहुत थक गया और उसे बहुत जोर प्यास लगी। चलते-चलते सूर्यास्त हो गया और वह एक आश्रम पहुँचा। वहाँ जाकर उसने एक व्यक्ति को देखा और उनसे पानी पिलाने की प्रार्थना की। उस व्यक्ति ने कहा - भाई! रात्रि में तो अमृत पीना भी उचित नहीं है। जिस अन्धकार में आंख भी काम नहीं करती, सूक्ष्म जीव आंख से नहीं दिखते। ऐसे समय में पानी पीना उचित नहीं है।

उस व्यक्ति की मधुर वाणी सुनकर धनदत्त अत्यंत प्रभावित हुआ। उसने रात्रि में भोजन पानी के त्याग का नियम ले लिया और बाद में समाधिपूर्वक मरण किया। यही धनदत्त का जीव आगे चलकर रामचन्द्र का जीव बना और मुनिदीक्षा लेकर भगवान बना।

धुआँ किसका...

एक बार देश के महापुरुष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद नाव में बैठकर अपने गांव जा रहे थे। उनके पास एक अंग्रेज बैठा हुआ था, जो कि सिगरेट पी रहा था। बहुत देर तक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद उसकी सिगरेट की गंध सहन करते रहे। बाद में वे अंग्रेज अधिकारी से बोले - ये सिगरेट जो आप पी रहे हैं, क्या वह आपकी है? अंग्रेज अधिकारी ने घूरते हुये कहा - मेरी नहीं तो क्या तुम्हारी है ?

राजेन्द्र प्रसादजी बोले - तो फिर यह धुआँ भी आपका ही है। इसे आप अपने पास संभाल कर रखें। इसे दूसरों पर क्यों फेंकते हो? राजेन्द्र बाबू का यह जबाब सुनकर उस अंग्रेज अधिकारी को अपनी सिगरेट फेंकनी पड़ी।

प्रशंसा

आचार्य भास्कर भट्ट के आश्रम में सोमप्रभ नया शिष्य था। वह दूसरे ही दिन जल्दी उठ गया और गुरुदेव को प्रणाम करके बोला - गुरुवर! चारु, मुदित, मणिभद्र, कपिल आदि सभी सहपाठी बहुत आलसी हैं। अभी तक सो रहे हैं और मैंने तो आश्रम में झाड़ू आदि लगाकर स्नान-ध्यान आदि का कार्य पूरे कर लिये हैं।

आचार्य भास्कर भट्ट ने सोमप्रभ की ओर देखा और बोले - जल्दी उठकर दूसरों की निन्दा और स्वयं की प्रशंसा करने से अच्छा था कि तुम देर तक सोये रहते। यह सुनकर सोमप्रभ का सिर शर्म से झुक गया।

अनर्थदण्ड

सांसारिक जीवन में हमारे दैनिक कार्यों में पाप के कार्य होना स्वाभाविक बात है। कुछ पाप ऐसे होते हैं जिनके बिना हमारा जीवन ही नहीं चल सकता। जैसे - भोजन बनाना, चलना, बर्तन मांजना, नहाना, व्यापार आदि कार्य। चार प्रकार की हिंसा में इन्हें आरम्भी और उद्योगी हिंसा कहा है। साथ ही जिनवाणी का यह भी निर्देश है कि हमें ऐसे व्यापार नहीं करना चाहिये जिसमें प्रत्यक्ष हिंसा का पाप होता हो जैसे चमड़े का, दवाओं का, कीटनाशक दवाईयों का। इसके साथ ही हम ऐसे कार्य करके पाप का बन्ध करते हैं जिनसे कोई लाभ नहीं होता और जो किसी काम के लिये उपयोगी नहीं होते। इन्हें अनर्थदण्ड कहा जाता है। न अर्थः अनर्थः जिस कार्य में कुछ अर्थ, सार, प्रयोजन नहीं हो वह अनर्थ है। दण्ड जो दण्डे के समान पीड़ा दे वह अनर्थदण्ड है अथवा जो अनावश्यक दण्ड या सजा दिलाये वह अनर्थदण्ड है। ये कार्य दूसरों को या स्वयं को प्रसन्न करने लिये किये जाते हैं और महा पाप उत्पन्न करते हैं और दुर्गति का कारण बनते हैं।

अनर्थदण्ड के भेद -

पापोपदेश - बिना प्रयोजन खेती, हिंसक व्यापार, मायाचारी, पशुओं के व्याापार, बिजली का मीटर धीमा करने, टेक्स बचाने, मकान बनवाने, कुंआ खुदवाने, पौधे लगाने आदि का उपदेश देना।

हिंसादान - बिना प्रयोजन तलवार, चाकू, चूहा मारने की दवाई, मच्छर मारने के लिये गुडनाइट आदि हिंसक उपकरण किसी को देना।

अपध्यान - बिना प्रयोजन दूसरे की हार-जीत आदि का विचार करना । जैसे - क्रिकेट मैच में समय बरबाद करना। अपना अहित सोचना यदि मेरा एक्सीडेन्ट हो जायेगा तो परिवार का क्या होगा, दुकान में आग लग जाये तो क्या होगा आदि अशुभ विचार करना।

दुःश्रुति - खोटे शास्त्र, उपन्यास, चुटकुले, हंसी मजाक, स्त्री श्रृंगार की बातें आदि पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना ।

प्रमादचर्या - बिना प्रयोजन चलना-फिरना, पृथ्वी खोदना, पानी फेंकना, घास-पत्ती तोड़ना, जिनमंदिर जाते समय सब्जी खरीदना, गाड़ी धोने में पानी बरबाद करना, बोरिंग के पानी से टंकी भरने पर पानी बहना, मंजन करते समय पानी बहाना, फव्वारे से नहाना, एक गिलास पानी लेकर आधा पानी पीना बाकी फेंकना, टीवी देखना यह सब प्रमादचर्या के अन्तर्गत आता है। यह सब महापाप का कारण है।

अथवा अनर्थदण्ड तीन प्रकार के होते हैं -

मानसिक अनर्थदण्ड - बिना काम के विचार करना। जैसे - भिखारियों को देखकर सोचना बहुत पैसा कमाते हैं, किन्नरों को देखकर उनकी पर्याय की करुणा नहीं आना पर उनको पैसा मांगते देखकर सोचना कि ये काम अच्छा है, बिना काम किये बहुत कमाई होती है।

वाचिक अनर्थदण्ड - चुटकुले सुनाना, हंसी मजाक करना, किसी की निन्दा करना, फिल्मों या सीरियल की कहानी सुनाना।

कायिक अनर्थदण्ड - बिना प्रयोजन इधर-उधर घूमना, हाथ नचाना, पैर पटकना।

या अनर्थदण्ड दो प्रकार के भी हैं -

लौकिक क्षेत्र में किये जाने वाले - विवाह, जन्मदिवस के आयोजनों में अनावश्यक रुपया खर्च करना, खाना-पीना, बिना प्रयोजन घर में सामान एकत्रित करना, नाली में गरम पानी फेंकना, बिना देखे सामान खिसकाना, बिना देखे चलना।

अलौकिक क्षेत्र में किये जाने वाले - मंदिर, तीर्थक्षेत्र, व्रत-उपवास आदि क्षेत्रों और कार्यों में अनावश्यक क्रियायें या विचार करना।

सार की बात यह है कि हम इन पापों से बचने का प्रयास करें और प्रयोजनभूत कार्यों को करें जिससे स्वयं और समाज को लाभ पहुँचे।

शराबी और मिथ्यात्वी

एक शराबी शराब पीकर नशे में झूमता हुआ चला जा रहा था। अचानक उसके सामने एक पेड़ आ गया। उसने जोर से चिल्लाकर कहा - ऐ पेड़! सामने से हट। भला पेड़ सामने से कैसे हटता? उसने फिर दो-तीन बार चिल्लाकर पेड़ को हटने के लिये कहा - पर पेड़ तो वहीं खड़ा रहा। फिर उस शराबी ने गुस्से में आकर उस पेड़ को जोर से पैर मारा। पेड़ का कुछ नहीं हुआ, पर संतुलन बिगड़ने से उस शराबी का चेहरा दूसरी ओर हो गया।

तब वह हंसते हुये बोला - देखा..! लातों के भूत बातों से नहीं मानते। लात खाकर हट गया न सामने से।

इसी प्रकार मिथ्यादृष्टि जीव भी मोह के नशे में ऐसा मानता है कि मैं सबको बदल सकता हूँ और इस प्रयास में अपना ही अहित करता रहता है।

देश के अनेक नगरों में

बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन सम्पन्न

देवलाली - यहाँ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले बाल संस्कार शिविरों की श्रृंखला का 21वाँ बाल संस्कार शिक्षण शिविर दिनांक 8 मई से 13 मई तक सानन्द सम्पन्न हुआ। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मुम्बई द्वारा पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली के सुरम्य वातावरण में सम्पन्न इस शिविर में श्री वीनूभाई शाह और श्री उल्लासभाई जोबालिया का विशेष सहयोग रहा ।

इसमें पण्डित बाबूभाई मेहता, विराग शास्त्री, पण्डित अनिलभाई दहीसर, ब्र. चेतना बेन, आशीष शास्त्री, अभय शास्त्री, अभिषेक शास्त्री, देवांग शास्त्री, मंथन शास्त्री, श्रीमति श्रुति जैन, श्रीमति स्वस्ति जैन, कु. जीनल बेन ने कक्षायें लीं।

जबलपुर - देश में वृहद रुप से आयोजित होने वाले बाल संस्कार शिविरों में से एक जबलपुर में आयोजित होने वाला शिविर 11वें वर्ष ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 7 मई से 13 मई तक आयोजित इस शिविर में लगभग 400 बालक-बालिकाओं ने सहभागिता की।

खड़ैरी - यहाँ चतुर्थ बाल संस्कार शिविर 10 मई से 17 मई तक सम्पन्न हुआ। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन और शास्त्री परिषद, खड़ैरी के संयुक्त प्रयासों से सम्पन्न इस शिविर में बाल वर्ग से लेकर प्रौढ़ वर्ग ने भी तत्वज्ञान का लाभ लिया। इस कार्यक्रम पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, पण्डित विक्रान्त पाटनी आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। समापन कार्यक्रम में श्री विराग शास्त्री का मांगलिक व्याख्यान हुआ।

खण्डवा - श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट द्वारा स्थानीय पोरवाड धर्मशाला में दिनांक 23 मई से 30 मई तक बाल-युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली, पण्डित आकेशजी उभेगांव और श्री विराग शास्त्री के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। साथ पण्डित प्रियंक शास्त्री, खुरई और श्री अक्षत शास्त्री छिन्दवाड़ा ने बाल कक्षायें लीं।

पुणे - पुणे महानगर में प्रथम बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। स्थानीय एच.एन.डी. जैन बोर्डिंग में दिनांक 5 जून से 9 जून तक आयोजित यह शिविर आशातीत सफल रहा। श्री वीतराग विज्ञान जैन ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में श्री विराग शास्त्री, पण्डित अमोल शास्त्री हिंगोली, जितेन्द्र शास्त्री, प्रसन्न शास्त्री,

अनुभव जैन मंगलार्थी, अमोल महाजन ने कक्षायें लीं। साथ ही पण्डित शांतिनाथ पाटिल ने अंग्रेजी में धार्मिक कक्षा का संचालन किया। कार्यक्रम के प्रथम दिन विश्व पर्यावरण दिवस पर जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। 7 जून को श्रुतपंचमी के दिवस पर पूना में पहली बार जिनश्रुत शोभायात्रा का मंगल आयोजन हुआ। प्रतिदिन विराग शास्त्री के स्वाध्याय का लाभ भी प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के प्रथम दिन विदुषी श्रीमति लीलावती जैन का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ तथा समापन समारोह में श्री अजितजी बड़ौदा, श्री शांतिनाथजी पुणे, श्री वीनूभाई शाह मुम्बई, श्री ब्रजलालजी जैन मुम्बई और कु. सुमी सुनील सर्राफ मुम्बई की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का सफल आयोजन पण्डित नगेशजी पिड़ावा और पण्डित अमितजी अरिहन्त के कुशल संयोजन में डॉ. किरण शहा, श्री सुनीलजी गांधी, पण्डित जीवराजजी जैन के सहयोग से संपन्न हुये। इस सम्पूर्ण आयोजन में जैन बोर्डिंग के प्रबंधक श्री सुरेन्द्रजी गांधी का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

सभी स्थानों पर प्रातः योग-ध्यान, जिनेन्द्र पूजन, वर्गवार कक्षायें, सामूहिक कक्षायें, सांस्कृतिक कार्यक्रम, जिनेन्द्र भक्ति, विराग शास्त्री द्वारा संगीतमय कथा, प्रोजेक्टर पर विशिष्ट ज्ञानवर्द्धक वीडियो का आयोजन किया गया।

सोनगढ़ बाल यात्रा सम्पन्न

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ के परिचय कराने के उद्देश्य से दिनांक 2 अप्रेल से 4 अप्रेल तक आयोजित इस यात्रा का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश और इंदौर मुमुक्षु मण्डल के तत्वावधान में आयोजित इस यात्रा में मध्यप्रदेश की पाठशालाओं के लगभग 350 बच्चों ने सहभागिता की । इस यात्रा में ब्र.सुमतप्रकाशजी जैन, पण्डित बाबूभाई मेहता, श्री विराग शास्त्री, पण्डित विवेकजी छिन्दवाड़ा आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। इस दौरान बच्चों को गुरुदेवश्री की जन्म स्थली उमराला, चैतन्यधाम और एकल्या तीर्थ के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ । इस यात्रा का नेतृत्व श्री विजयजी बड़जात्या ने किया और श्री रितेशजी, मनीष वत्सल, श्री अमित अरिहन्त आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

गुना में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न

गुना में नव निर्मित श्री महावीर जिनालय का पंचकल्याणक महोत्सव दिनांक 5 अप्रेल से 10 अप्रेल तक सानन्द सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में डॉ. संजीव गोधा, पण्डित राजकुमारजी जैन, विराग शास्त्री आदि के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. अभिनन्दन कुमारजी के प्रतिष्ठाचार्यत्व और पण्डित संजय शास्त्री के निर्देशन पण्डित सुबोधजी शास्त्री आदि के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

खैरागढ़ में महावीर जयन्ती का कार्यक्रम का विशेष आयोजन -

छत्तीसगढ़ की धर्मनगरी खैरागढ़ में सकल जैन श्री संघ द्वारा आयोजित महावीर भगवान का जन्मोत्सव का विशेष आयोजन किया गया। इस अवसर पर महावीर जयन्ती के 7 दिन पूर्व से ही प्रतिदिन प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय विशेष आयोजन में विराग शास्त्री द्वारा महावीर भगवान के पूर्व भवों की संगीतमय कथा की प्रस्तुति की गई। 17 अप्रेल को प्रातः राजसभा का आयोजन हुआ और रात्रि में मैनपुरी के विशाल पालने पर महावीर स्वामी का पालना झूलन का कार्यक्रम किया गया। सम्पूर्ण आयोजन अध्यक्ष श्री कमलेशजी गिड़िया के निर्देशन और पण्डित अभय शास्त्री के कुशल संयोजन में **श्रीमती श्रुति अभय जैन के सहयोग से सम्पन्न हुआ** ।

अब नहीं पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण Not Any More का प्रकाशन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा लघु धार्मिक नाटक की पुस्तक का **अब नहीं** प्रकाशन किया गया था। इस पुस्तक को सम्पूर्ण जैन समाज से अपार स्नेह प्राप्त हुआ और इस पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण की मांग को देखते हुये इसके अंग्रेजी संस्करण **Not Any More** का प्रकाशन भी किया गया है। इसके प्रकाशन में श्रीमति पूर्णिमा बेन उल्लास भाई जोबालिया का विशेष अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ। इसका विमोचन देवलाली में श्री उल्लासभाई के करकमलों से और सूरत में श्री वीरेशजी जैन के द्वारा किया गया तथा मुम्बई के विलेपारला के जैन मंदिर में श्री अनंतराय ए.सेठ और श्री अक्षय भाई दोशी के करकमलों से विमोचन हुआ ।

उदयपुर में गुरुवाणी मन्थन शिविर सम्पन्न

राजस्थान की झील नगरी उदयपुर में 23 जून से 27 जून तक आयोजित गुरु वाणी मन्थन शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। इस शिविर में गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचनों के मुख्य बिन्दुओं पर समागत विद्वान पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित चेतन भाई मेहता राजकोट, पण्डित देवेन्द्र कुमारजी बिजौलिया के द्वारा गम्भीर तात्विक चर्चा की गई। इस कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय श्री तेरापंथ भवन में श्री आई.एस.जैन परिवार की ओर से किया गया। इस कार्यक्रम में उदयपुर की मुमुक्षु संस्थाओं के सहयोग शाश्वतधाम को विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया।

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके सदस्य बन सकें - पेटीएम भुगतान सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब आप सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाटसएप / करें।

अब पारलेजी बिस्कुट में निकली छिपकली

नाम बड़े और दर्शन छोटे वाली कहावत आज फिर सच हो गई जब एक अंतर्राष्ट्रीय कम्पनी के बिस्कुट में छिपकली निकली। चहकती चेतना पत्रिका के लगभग हर अंक में बाजार के खानपान में मांस आदि की जानकारी प्रमाण सहित प्रकाशित होती रही है। मुजफ्फनगर के ब्रह्मपुरी में रहने वाले अंकित त्यागी अपनी ढ़ाई साल की बच्ची मायरा के साथ नाश्ता कर रहे थे। मायरा पारलेजी बिस्किट दूध में डुबोकर खा रही थी। कुछ देर बाद मायरा ने अचानक आधा बिस्कुट मुंह से बाहर निकाल नीचे रखा तो उसमें एक मरी हुई छिपकली का आधा हिस्सा था। अचानक मायरा का हालत बिगड़ने लगी तो अंकित उसे लेकर तुरन्त हॉस्पिटल ले गये। वहाँ जाँच करने पर उसकी रिपोर्ट मे जहर होने की पुष्टि हुई। डॉक्टर ने तुरन्त जहर का असर कम करने वाले इंजेक्शन दिये जिससे मायरा के स्वास्थ्य में सुधार आया।

अंकित त्यागी ने कम्पनी के विरुद्ध सिविल लाइन थाने में रिपोर्ट लिखवाई और वे उपभोक्ता फोरम में केस दर्ज करने की बात कह रहे हैं ताकि जो मायरा के साथ हुआ वह किसी और के साथ न हो।

चाऊमिन खाने से फेफड़े फटे, मुश्किल से बची जान

दिल्ली के यमुना नगर सड़क किनारे बिकने वाले चाउमिन खाने से एक बच्चे की जान मुश्किल में पड़ गई। चाउमिन की चटनी स्वाद के लिये डाले गये एसिड से बच्चे का शरीर जल गया और फेफड़े खराब हो गये। जब बच्चे को अस्पताल जलाया गया तब इस बच्चे का शरीर काला पड़ चुका था। बच्चे को सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। एक्स रे करने पर बच्चे के दोनों फेफड़े फटे हुये मिले। बच्चा लगातार 16 दिन तक वेंटीलेटर पर रहा और डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर चेस्ट ट्यूब डालकर उसकी जान बचाई।

बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर निखिल बंसल ने बताया कि आजकल चाउमिन, चाट आदि में स्वाद के लिये चटनी में एसिटिक एसिड मिलाया जाता है। यह एसिड गोलगप्पे के पानी में भी डाला जाता है। इससे पानी टेस्टी हो जाता है। हमें बाजार की इन गन्दी वस्तुओं को कभी नहीं खाना चाहिये।

चाउमीन खाने से बच्चे के फेफड़े फटे, मुश्किल से बच पाई जान

राजकुमार सम्प्रति

पाटलीपुत्र नगर में चन्द्रगुप्त राजा का पौत्र और बिन्दुसार का पुत्र अशोक राज्य करता था। अशोक का पुत्र कुमार कुणाल उज्जयिनी में रहता था। जब कुणाल आठ वर्ष का हुआ तो अभिभावकों ने सम्राट अशोक को जानकारी भेजी कि कुमार आठ वर्ष के हो चुके हैं। यह शुभ संदेश प्राप्त कर अशोक ने एक पत्र उज्जयिनी के लिये एक पत्र लिखा। उसमें लिखा था - **'अधीयतां कुमारम्'** (अर्थात् कुमार को पढ़ाओ।) कुणाल कुमार की सौतेली माँ ने वह पत्र देखने के लिये मांगा और ईर्ष्या के कारण सुई में थूक लगाकर **अधीयतां** के ऊपर बिन्दी लगा दी। जिससे वह **अंधीयतां** हो गया जिसका अर्थ हो गया **कुमार को अंधा कर दो** और वह पत्र राजा को लौटा दिया। राजा का मन कहीं और था, इसलिये उसने वह पत्र मोहर बन्द करवाकर वह पत्र उज्जयिनी भेज दिया।

जब यह पत्र उज्जयिनी में पढ़ा गया तो पढ़ने वाले मौन हो गये। उन्हें मौन देखकर कुमार ने पूछा -इस पत्र में क्या लिखा है? तब उसे बताया गया कि इसमें लिखा है- कुमार को अन्धा कर दो। उसने सोचा - हम मौर्यवंश के हैं और हमारे वंश में पिता की आज्ञा का अनादर नहीं किया जाता। उसने गर्म शलाका से अपनी आंखें फोड़ लीं। इस घटना की जानकारी सम्राट अशोक को मिली तो वे बहुत दुःखी हुये और उन्होंने उज्जयिनी नगर अपने दूसरे पुत्र को दे दिया और कुणाल को दूसरा नगर दे दिया।

कई वर्ष बाद कुणाल को विवाह के बाद एक पुत्र हुआ। कुणाल गाने की विद्या में बहुत कुशल था और गाता हुआ नगर-नगर घूमता रहता था। एक बार वह घूमता हुआ पाटलीपुत्र आया। कुणाल ने पर्दे के पीछे बैठकर अपनी गायन कला से सम्राट अशोक को प्रसन्न कर दिया। अशोक ने पूछा - मांगो, क्या मांगते हो? कुणाल ने गाकर उत्तर दिया - चन्द्रगुप्त का प्रपौत्र, बिन्दुसार का पौत्र और सम्राट अशोक का पुत्र कांकणी (कौड़ी) मांगता है। राजा पूछा - तुम कौन हो? तब कुणाल ने उत्तर दिया - आपका पुत्र।

राजा ने तुरन्त पर्दा उठाकर कुणाल को गले लगा लिया और रोते हुये कहा - तुम ऐसा क्यों कहते हो ? तुम तो राजा के योग्य हो, पर तुम राज्य लेकर क्या करोगे? तब कुणाल ने कहा - मेरा पुत्र हुआ है। सम्राट ने पूछा - कब? कुणाल ने कहा - सम्प्रति (अभी)। अशोक ने अपने पौत्र को लाने का आदेश दिया और उसका नाम सम्प्रति रखा। सम्प्रति ने जैन धर्म का बहुत प्रचार किया और अनेक जैन स्तूप बनवाये।

डिस्पोजल की चाय से भयंकर बीमारियाँ

डिस्पोजल में चाय पीना बीमारियों को दावत देना

आज हर घर-परिवार में कोई न कोई न सदस्य बीमार हो रहा है। लोग अपनी अनैतिक जीवन शैली को दोष न देकर देकर दूसरे साधनों की बुराई करते रहते हैं। हम साधनों की आसानी से उपलब्ध हो जाने के कारण उसके नुकसान के बारे में सोचना बन्द कर देते हैं और पता ही नहीं चलता कि कौन सी घातक बीमारी हमारे पूरे जीवन को बरबाद कर देती है। पुणे के प्रसिद्ध डॉक्टर किरण शहा के अनुसार मेरे पास आज हर दिन कैंसर के 2 से 3 नये आ रहे हैं। उनके अनुसार आज तीन बीमारियाँ सबसे अधिक फैल रहीं हैं - कैंसर, ब्लडप्रेशर और शुगर और इसका कारण है बिगड़ती जीवन शैली।

आज बड़े समारोहों में प्लास्टिक व थर्मोकोल के कप चाय पीने का सबसे आसान साधन बन गये है। क्या आप जानते हैं कि एक छोटे से डिस्पोजल कप में चाय आदि पीने से दो मिलीग्राम प्लास्टिक आपके पेट में चला जाता है जिससे कैंसर होने की संभावना बढ़ जाती है। पटना के श्री महावीर कैंसर संस्थान के रिसर्च से यह स्पष्ट हुआ है कि अधिक गर्म पदार्थ के साथ प्लास्टिक के घुलने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। जिससे प्लास्टिक चाय के साथ हमारे शरीर में चला जाता है, इससे शरीर के हारमोन्स का संतुलन बिगड़ जाता है और लगातार प्लास्टिक कप में चाय पीने से थकान, एकाग्रता में कमी, ब्लड प्रेशर, शुगर, थॉयरायड जैसी बीमारियों का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है। डिस्पोजल के केमिकल दिमाग को प्रभावित करते हैं जिससे याद रखने की क्षमता पर भी असर होने लगता है।

पेट के लिये जहर - किडनी ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. राजेश रंजन के अनुसार प्लास्टिक व थर्माकोल के ग्लास में वैक्स की परत लगाई जाती है, ऐसे में जितनी बार आप उसमें चाय पीते हैं उतनी बार वैक्स भी आपके पेट में जाता है, जिससे पाचन तंत्र पर भी असर पड़ता है।

डिस्पोजल में मेट्रोसोमिन, बिस्फीनॉल और बर्ड इथाइल डेक्सिन नाम के केमिकल्स पाये जाते हैं जो शरीर के तंत्र को खराब करते हैं। इसका सबसे ज्यादा असर गर्भवती महिलाओं में होता है।

जानकारी देना हमारा दायित्व है
पर इसके बारे में निर्णय करना आपका।

वात्सल्य पर्व

दोहा

रक्षा बन्धन पर्व यह, देता शुभ संदेश ।
मुनिराजों की याद कर, हरो कर्म का वेश ।।

(मानव)

जय जय मुनिजराज हमारे, हैं जिनशासन रखवारे ।
सब जग निःस्सार बताये, निज अनुपम सौख्य जताये।।
आचार्य अकम्पन स्वामी, इस भू पर सहज विचरते ।
मुनि संग सात सौ निस्पृह, मुक्ति दर्पण को लखते ।
सब मुनिवर आत्म विहारी, चैतन्य रसामृत पीते ।
जड़ निधियाँ सारी त्यागीं, आतम निधि से ही जीते ।।
फिर नगर हस्तिनापुर में, मुनि संघ सात सौ आया ।
बलि आदि मंत्री चित में, पूरब का बैर था जागा ।।
नृप से मांगा तब नृप पद, उपसर्ग किये बहु भारी ।
कैसे उपसर्ग कहूँ मैं, जिव्हा मेरी थक जाती ।।
वह सावन मास समय था, रिमझिम वर्षा भी होती ।
शीतल बयार भी चलती, बिजली भी कड़कती ।।
वहाँ यज्ञ रचाये बलि ने, वहाँ घास हरी भी उगा दी ।
पर मुनि नहीं घबराये, अपनी धुनि वहीं रमा दी ।।
देखो मुनि की समता को, वह समता नहीं है हममें ।
यदि हो प्रतिकूल व्यवस्था, हम घबरा जाते क्षण में ।।
ये ही सावन के दिन थे, क्यों मुनिवर याद न आते ।
था मुनिराजों पर संकट, हम लोक सम्बन्ध बढ़ाते ।।
कोई कहता सीजन आया, कोई कहता बहना आई ।
कोई बहन कहीं पर रूठी, भैया ने सुधि बिसराई ।।
आओ संकल्प करें हम, मुनिवर को याद करेंगे ।
जिनशासन रहे सुरक्षित, ऐसा शुभ भाव धरेंगे ।।

रक्षाबंधन अवसर पर इसका सामूहिक पाठन कर सकते है ।

रचनाकार विराग शास्त्री

चहकती चेतना

जन्म दिवस

जन्म-मरण के अभाव की भावना में
जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

ज्ञानी को जीवन के संकट भी
लगते उनको **पर्व** ।
निज बल से ही **प्रसन्न** रहें,
नष्ट विपद हों सर्व।।

पर्व प्रसन्न शेट्टे, सांगली
22 अगस्त

जिनधर्म की बेटी हो, **सान्वी** आपका नाम।
सीता रेवती सा साहस हो, तो दुनिया करे प्रणाम।।

सान्वी जैन सुपुत्री अजित जैन इंदौर 21 मई

जिनधर्म की शरण हो, मन हो जाये शांत।
अन्वी श्री जिनवचन से पद पाना अशांक।।

अन्वी अशांक भण्डारी, बैंगलोर 11 जुलाई

नर जीवन उपहार सम, करना ऐसा काम।
शुभ कामों में चित्त धर, **सचित** बनो महान।।

सचित कान्ति जैन, दुर्ग 16 जुलाई

स्वयं **रचित** यह विश्व है, अपने में ही लीन।
भोंगे सारे जीव ही, अपने ही परिणाम।।

रचित कान्ति जैन, दुर्ग 19 जुलाई

Not Anymore...

(A Collection of Short Moral Jain Stories)

Writer
Virag Shastri, Jabalpur (M.P.)

Publisher
Acharya Kundkund Sarvodaya Foundation
Jabalpur (M.P.)

Rs. 20/-

Whatsapp Contact No. : 9300642434